वैश्विक राजनीति में भारत

(India In Global Politics)

डॉ.रजनी कान्त तिवारी

असिस्टेंट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय पड़ियापार,जैसवाली,देवरिया

dr.rajaniktiwari@gmail.com

सारांश (Abstract)-प्रस्तुत शोध पत्र वैश्विक राजनीति में भारत की स्थिति अथवा भूमिका का विश्लेषण करता है। इसके तहत भारत की वैश्विक भूमिका का ऐतिहासिक संदर्भ, उसकी रणनीतिक नीतियों, कूटनीति तथा आर्थिक विकास सम्मलित है। यह शोध पत्र भारत की अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भागीदारी, द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय संबंधों तथा वैश्विक चुनौतियों की प्रति इसकी दृष्टिकोण का संश्लेषण कर यह बताता है कि भारत कैसे वैश्विक राजनीति में एक प्रमुख शक्ति के रूप में विश्व व्यवस्था को आकर दे रहा है।

कुंजी शब्द (Key word)- औपनिवेशिक विरासत,स्वतंत्रता, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, वैश्विक एकीकरण,आर्थिक विकास, व्यापार एवं निवेश, द्विपक्षीय बहुपक्षीय संबंध, कूटनीतिक सामरिक चुनौती।

परिचय - पिछले दो दशकों से भारत का प्रभावशाली वैश्विक उदय और वैश्विक परिदृश्य में भारत की स्थिति की चर्चा जोरदार तरीके से उठाया जा रहा है। भारत और दुनिया के प्रमुख लेखको, चिंतकों, राजनेताओं और आलोचक ने वैश्विक पटल पर भारत की बढ़ती शक्ति, समर्थ, एवं नेतृत्व को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया है। भारतीय विद्वानों शशि थरूर ने पैक्स इंडिका, सी राजमोहन ने क्रॉसिंग दि क्यूबिक, भारत कर्नाड वाई इंडिया इज नॉट ए ग्रेट पावर (वर्तमान समय में) में भारत की भूमिका को विभिन्न रूपों में सामने लाया है।[1]

आज भारत विश्व की सबसे बड़ी आबादी, लोकतंत्र, आर्थिक एवं तकनीकी रूप से सशक्त, सार्क का संस्थापक सदस्य, G 77,G20 आर.आई.सी, ब्रिक्स, आईबीएसए और क्वाड जैसे समूह का वार्ता साझेदार है। भारत नव कार्जेनियन विदेश नीति के साथ साथ, मध्य एशिया, पूर्वी एशिया, पश्चिम एशिया एवं प्रशांत एशिया तक बहूआयामी जुड़वा के साथ वैश्विक राजनीति में अपनी रणनीतिक स्वायत्तता की विदेश नीति अपनाकर वैश्विक पटल पर दमदार उपस्थिति दर्ज की है।[2]

ऐतिहासिक संदर्भ- प्राचीन काल में एक राष्ट्र के रूप में भारत का उद्भव तो नहीं माना जाता है जिससे यह सिद्ध किया जा सके कि वैश्विक राजनीति में उस समय भारत की क्या भूमिका थी। तथापि उस वक्त भारत का अन्य देशों के साथ सामाजिक,आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध अवश्य स्थापित थे । वैश्विक राजनीति की अवधारणा प्राचीन काल में आधुनिक अर्थ में मौजूद नहीं थी तथापि सिंधु घाटी की सभ्यता/ हड़प्पा सभ्यता प्राचीन सभ्यताओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता था तथा अन्य सभ्यताओं जैसे मेसोपोटामिया (वर्तमान इराक),फारस की खड़ी, तटीय क्षेत्र और मिश्र से व्यापारिक संबंध थे जिससे भारत की मजबूत स्थिति का पता चलता है।

इसी प्रकार वैदिक काल में,जो आर्यों के आगमन एवं कृषि समाज की स्थापना का कल था, वैश्विक राजनीति का संदर्भ तो सीमित था तथापि कुछ बाहरी क्षेत्र के साथ संपर्क था। महाजनपद काल में भी वैश्विक

राजनीति का कोई विशेष संदर्भ नहीं दिखता है क्योंकि 16 महाजनपद अपने आंतरिक संघर्ष में ही उलझे रहे। लेकिन इस सत्ता संघर्ष ने क्षेत्रीय राजनीति को अवश्य आकार दिया।

मौर्य साम्राज्य में चाणक्य की अर्थव्यवस्था में वर्णित मंडल सिद्धांत विदेश नीति का एक प्रमुख सिद्धांत था जिसमें पड़ोसी राज्यों को मित्र,शत्रु,अरि, तटस्थ आदि रूपो में विभाजित कर वैश्विक राजनीतिक संबंधों को दर्शाया गया।[3] भारत में सिकंदर महान की आक्रमण के बाद बड़ा राजनीतिक परिवर्तन देखने को मिला। उसके लौटने के बाद मौर्य साम्राज्य ने पश्चिमोत्तर क्षेत्र में ग्रीक शासको के साथ राजनीतिक एवं कूटनीतिक संबंध स्थापित किए। जब सेल्यूकस ने अपनी बेटी की शादी चंद्रगुप्त से की तो उसने पश्चिम के कई क्षेत्रों पर अधिकार दे दिया। यह भारत की वैश्विक राजनीति की पहली राजनीतिक कूटनीतिक विजय मानी जा सकती है। अशोक महान कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध धर्म को अपनाया जिसकी शांति एवं अहिंसा की नीति थी। इस आधार पर उसने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार हेतु श्रीलंका, अफगानिस्तान और मध्य एशिया के साथ धार्मिक और सांस्कृतिक संबंध स्थापित किया। अशोक की शांति,अहिंसा के नीति से विदेश में भारत की छवि एक शांतिप्रिय एवं आध्यात्मिक राष्ट्र के रूप में स्थापित हुई।[4]

चोल साम्राज्य (9वी एवं 13वीं) शताब्दी में नव सैनिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे जिन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया (मलय प्राय द्वीप,सुमात्र,जावा) के साथ व्यापारिक एवं सामूहिक संबंध स्थापित किया था। यह भारतीय विदेश नीति में सामुद्रिक शक्ति का प्रारंभ माना जाता है।[5]

मध्यकाल अर्थात मुगल काल में (16वीं से 18 वी शताब्दी में) मुगलों का विशेष जोर व्यापार पर था जिसके तहत उसने कूटनीतिक संबंध बनाकर फारस, उजबेकिस्तान, तुर्की एवं यूरोपीय विशेष कर पुर्तगालियों व ब्रिटिश से संबंध स्थापित किया। अकबर के विदेश नीति का मुख्य विषय व्यापारिक ही था।

इसी प्रकार औपनिवेशिक काल अर्थात 18वीं शताब्दी के मध्य से लेकर 1947 तक भारत की वैश्विक राजनीति ब्रिटिश शासन के अधीन ही रहे क्योंकि औपनिवेशिक भारत की विदेश नीति का निर्धारण सन 1858 में स्थापित इंडिया हाउस लंदन से होता था। तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि उस समय अंतरराष्ट्रीय कानून के रूप में भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व का स्तर प्राप्त नहीं किया था। उस समय भारत का एक अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व था। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उसने राष्ट्र संघ एवं संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रस्ताव पर प्रारंभिक सदस्यता के रूप में हस्ताक्षर किया था।[6]

भारत ब्रिटिश शासन के अधीन एक डोमिनियन स्वशासित क्षेत्र के रूप में था। तथापि उसने अन्य उपनिवेशों की भांति औपनिवेशिक सम्मेलन में भाग लेने की अधिकार की मांग करता रहा। प्रथम विश्व युद्ध में भारत की पूर्ण सहयोग को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने भारत को 1917 में औपनिवेशिक सम्मेलन संगठन (इसी वर्ष इंपीरियल सम्मेलन, बाद में कॉमनवेल्थ में परिवर्तन) बनाया। इंपीरियल सम्मेलन में प्रतिनिधित्व के आधार पर ही भारत पेरिस शांति सम्मेलन में भागीदारी का दावा प्रस्तुत किया। हालांकि इसका प्रारंभिक विरोध किया गया (राष्ट्रपति विल्सन एवं फ्रांस के प्रधानमंत्री क्रिमिनलशो ने) किंतु भारत पेरिस शांति सम्मेलन में शामिल होकर वारसा की संधि व समझौतों पर हस्ताक्षर कर राष्ट्र संघ के प्रारंभिक सदस्यों के श्रेणी में आ गया। इस प्रतिनिधित्व का महत्व यह रहा की पराधीन भारत को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी प्राप्त होने लगी। इसी के परिणाम स्वरुप 1945 के सेन फ्रांसिस्को सम्मेलन में भारत ने भाग लेकर संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर कर इसकी प्रारंभिक सदस्यता प्राप्त की।[7]

उपर्युक्त के अतिरिक्त विमल प्रसाद ने अपनी पुस्तक ओरिजन आफ इंडिया फॉरेन पॉलिसी: दि इंडियन नेशनल कांग्रेस ऐंड वर्ल्ड अफेयर्स में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण और भारत की वैश्विक राजनीति में स्थापित होने की महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषण किया हैं। जैसे भारत ने सदैव साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद का खंडन किया। 1885 में कांग्रेस ने उत्तरी वर्मा को अपने में शामिल करने पर ब्रिटेन की निंदा की। आयरलैंड के स्वाधीनता संघर्ष (1920) का समर्थन किया। ब्रिटिश ने मिस्र,सीरिया, इराक व फिलीस्तीन को तुर्की से

अलग कर दिया जिसके विरोध में खिलाफत आंदोलन भारत में प्रारंभ हुआ। पराधीन एशियाई देशों के उत्थान हेतु 1920 में कजाकिस्तान के बाकू शहर में एशियाई देशों का सम्मेलन, साथ ही एशिया एवं यूरोप में साम्यवाद, साम्राज्यवाद की समाप्ति हेतु 1926, 1927 में क्रमशः जापान एवं चीन तथा 10 फरवरी 1927 का ब्रुशेल्स सम्मेलन में भारत की भागीदारी उसके बढ़ते वैश्विक पद का प्रमाण था। पून: एशियाई देशों का 1947 एवं 1949 में नई दिल्ली में सम्मेलन इंडोनेशिया के स्वाधीनता को लेकर भारत के बढ़ते वैश्विक राजनीति में भूमिका शुरुआत थी। वैश्विक मामलों पर नियमित प्रेस जारी करने हेतु अंततः 1936 में नेहरू को विदेश विभाग की स्थापना कर अध्यक्ष की हैसियत प्रदान की गई जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 1964 तक भारतीय विदेश नीति के प्रमुख शिल्पी रहे।[8]

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन - ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अतीत ने भारत के विदेश नीति को काफी हद तक प्रभावित किया। स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी एवं पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रभावशाली नेतृत्व में भारत की प्रारंभिक कूटनीतिक दृष्टिकोण में एक नए प्रकार की गुटनिरपेक्षता एवं आत्मनिर्भरता की भावना उत्पन्न की। द्विध्रुवीय विश्व राजनीति में बटी वैश्विक व्यवस्था में नेहरू की गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति वैश्विक राजनीति से भारत को न केवल पहचान दिलाई बल्कि वैश्विक राजनीति में भारत की भूमिका को आकार देने में महत्वपूर्ण निर्धारक साबित हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वैश्विक राजनीति द्विध्रुवीय हो गई थी। भारत दोनों महाशक्तियों से न केवल दूर रहकर स्वतंत्र विदेश नीति का पोषण किया बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत ने इस नीति के माध्यम से मध्यस्थ की भूमिका भी निभाई। भारत ने इसके माध्यम से पंचशील का सिद्धांत (संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान,गैर हस्तक्षेप, समानता और शांति सहअस्तित्व) दिया जो विश्व को शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के साथ रहने को आज भी संदर्भ देता है। इस नीति के माध्यम से भारत ने वैश्विक स्तर पर नवोदित राष्ट्रों की स्वतंत्रता का समर्थन किया,रंगभेद और औपनिवेशिकता का विरोध किया। भारत के इस नीति का वैश्विक साख यह रहा कि उसने कोरिया, कांगो, स्वेज तथा अन्य इसी प्रकार के अंतरराष्ट्रीय संकटों के समय संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में सक्रिय भूमिका निभाई। कोरिया संकट में नेहरू की पहल पर एक रिपेट्रिएशन आयोग का गठन भारत के वैश्विक राजनीति में उपस्थित का प्रारंभिक प्रमाण माना जाता है। भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का अगवा बन वैश्विक राजनीति को आज भी प्रभावित करता है। जब 1961 में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन हुआ था तब केवल भारत सहित 25 राष्ट्र ही इसमें शामिल थे जबकि वर्तमान में (2024) 120 देश शामिल है जो यूएनओ के बाद दूसरी सबसे बड़ी संस्था माना जाता है। भारत इन देशों के माध्यम से यूएनओ में नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (NIEO), ग्लोबल साउथ संवाद एवं नि:शस्त्रीकरण का आवाज अपने विभिन्न शिखर सम्मेलन में उठाकर अपनी भूमिका की सशक्तता को दिखाया है। यद्यपि NAM के बहुत से देश ने एनपीटी,सीटीबीटी जैसे नि:शस्त्रीकरण नीति पर हस्ताक्षर किए हैं तथापि भारत ने इन नीतियों को भेदभावपूर्ण मानते हुए आज तक हस्ताक्षर नहीं किया और मांग की कि सार्वभौम नि:शस्त्रीकरण तक इसका विरोध रहेगा जिस पर NAM देश का पूर्ण समर्थन है।[9]

भारत की अगुवाई में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का ही प्रभाव रहा है कि 1974 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था स्वीकार कर वैश्विक स्तर पर आर्थिक असमानता को समाप्त करने हेतु कार्य योजना बनाई। हालांकि इसके पूर्व 1964 में ही भारत ने G 77 के संस्थापक सदस्य के रूप में अंतरराष्ट्रीय आर्थिक नीतियों में सुधार और विकासशील देशों के अधिकारों को सुनिश्चित करने हेतु हमेशा एक नेतृत्वकारी भूमिका निभाई है। भारत का ही प्रयास रहा कि दक्षिण-दक्षिण संवाद स्थापित हुए तथा इब्सा (IBS) एवं ब्रिक्स (BRICS) जैसे संगठनों के माध्यम से विकासशील देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी सहयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। इसकी अगली कड़ी में भारत ने G20 शिखर सम्मेलन में 120 विकासशील देशों के लिए ग्लोबल साउथ समिट का आयोजन कर वैश्विक दक्षिण देश की समस्याओं को प्रमुखता से उठाने का मंच प्रदान कर एक नेतृत्व करी भूमिका अभिनीत की है।

आर्थिक सुधार एवं वैश्विक एकीकरण- 1991 के भारतीय उदारीकरण एवं वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वैश्विक स्तर पर भारत की भूमिका में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। भारत में हो रहे सुधारो ने इसकी अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेश और व्यापार के लिए खोल दिया जिससे तेज गति से भारत का विकास हुआ और वैश्विक अर्थव्यवस्था से एकीकृत हो गया । परिणामस्वरूप भारत का वैश्विक राजनीति में प्रभाव और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। बदलती वैश्विक परिस्थितियों में भारत ने 2.0 गुटनिरपेक्षता के नीति की पहल की जिसका उद्देश्य भारत की रणनीतिक स्वायतता बनाए रखना और वैश्विक राजनीति में राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करना है। इसकी एक झलक रूस यूक्रेन युद्ध में दिखी जहां भारत ने अमेरिका और रूस के दबाव में आए बिना अपने राष्ट्रीय हित के अनुकूल स्वतंत्र एवं रणनीतिक निर्णय लेता रहा।

व्यापार और निवेश- भारत का आर्थिक विकास एक सतत एवं दीर्घकालिक प्रक्रिया की परिणिति रही जिसने इसे विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना दिया। 1991 में भारत ने उदारीकरण,निजीकरण एवं वैश्वीकरण की नीति अपनाई जिसने लाइसेंसिंगराज खत्म किया,निवेश की अनुमति प्रदान की और बाजार अर्थव्यवस्था को और अधिक उदार बनाया। इससे कृषि,उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में क्रांतिकारी वृद्धि देखी गई। कृषि क्षेत्र में नई तकनीक, बीज का प्रयोग एवं सरकारी नीतियों (प्रधानमंत्री किसान सम्मन निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, पीएम कृषि सिंचाई योजना, कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर फंड, राष्ट्रीय कृषि बाजार, कृषि आपूर्ति श्रृंखला प्रसंस्करण योजना आदि) ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया। सड़क,रेलवे,बिजली, ऊर्जा(गैर परंपरागत) संचार जैसे बुनियादी ढांचे में बड़े पैमाने पर निवेश ने उद्योग और उत्पादन, ऑटोमोबाइल, फार्मास्यूटिकलस आदि को बहुत अधिक विस्तारित किया है। सरकार ने आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, गति शक्ति, जैसी योजनाएं प्रारंभ कर ई गवर्नेंस, फिनटेक और ऑनलाइन व्यापार को प्रोत्साहित किया है जिससे भारत की वैश्विक बाजार में उसकी भूमिका एवम आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभाव में वृद्धि हुई हैं। परिणाम स्वरुप भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजार एवं व्यापार से जोड़ा है। भारत डब्ल्यूटीओ का संस्थापक सदस्य है जिसके नीतियों को वह स्थान देता है। आज भारत विश्व के लगभग सभी देशों और व्यापारिक संगठनों से जुड़ा है जहां प्रमुख रूप से कच्चा तेल, रत्न आभूषण, औषधि ,वस्त्र, कृषि उत्पादन, आईटी सेवा, मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक्स, रसायन, रक्षा उत्पादन का आयात/निर्यात करता है। प्रमुख व्यापारिक साझेदारों में अमेरिका ,रूस, यूरोपीय यूनियन,अरब देश, दक्षेस संगठन के रूप में पड़ोसी देश, आसियान, ब्रिक्स, इब्सा G 20 ,G 77 ,बिम्सटेक संगठन एवं देश शामिल है। भारत दुनिया की 190 देश को करीब 7500 वस्तुओं का निर्यात करता है जबकि 140 देश के करीब 6000 वस्तुएं आयात करता है।[10] नवंबर 2023 में भारत का कुल निर्यात (वस्तुओं और सेवाओं का संयुक्त) 62.8 अरब अमेरिकी डाल रहा। हालांकि भारत का व्यापार घाटा चीन, रूस,दक्षिण कोरिया, हांगकांग के साथ क्रमशः 118.4,52.2,14.71 और 12.2 बिलियन डाल रहा है।[11] वर्ष 2047 में यदि भारत को विकसित राष्ट्र बना है तो इस व्यापार घाटा को न केवल कम करना होगा बल्कि वैश्विक व्यापार में भारत की भागीदारी में (भारत का वैश्विक व्यापार 2% से भी कम है वहीं विकसित देशों की भागीदारी 39 से 57% तक है) वृद्धि करनी होगी।[12] भारत को आर्थिक आधार पर एक विकसित राष्ट्र होने के लिए अपने जीडीपी ग्रोथ को लगातार दहाई के में रखना होगा।

क्षेत्रीय सुरक्षा- किसी भी देश की विदेश नीति, सामरिक निर्णय और वैश्विक मंच पर उसकी भूमिका को क्षेत्रीय सुरक्षा के प्रश्न गहराई तक प्रभावित करते हैं। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा । भारत के पड़ोसी देशों यथा चीन,पाकिस्तान, नेपाल, म्यांमार, भूटान ने भी अधिक या कम भारत को प्रभावित किया है। चीन के साथ सीमा विवाद एवं पाकिस्तान के साथ दीर्घकालिक तनाव तथा अन्य पड़ोसी देशों द्वारा चीन के प्रभाव में आने से भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा की प्राथमिकताएं बदली हैं। परिणाम स्वरुप भारत ने परंपरागत मित्र रूस के अतिरिक्त रणनीतिक स्वायत्तता के तहत अमेरिका , इजराइल, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, जैसे देशों के साथ रक्षा समझौता कर, रक्षा उपकरणों को आयात किया है और अपने सामरिक शक्ति को बढ़ाया है। भारत ने क्षेत्रीय सुरक्षा को मजबूत करने हेतु अपने क्षेत्रीय एवं वैश्विक भूमिका का विस्तार किया है । इसके तहत भारत ने एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) ,हिंद महासागर रिम एसोसिएशन(IORA), आसियान और क्वॉड (QUAD) जैसे मंचों में भूमिका अभिनीत की है जो क्षेत्रीय सुरक्षा और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थितरता सुरक्षित करने में सहयोग देता है। इसके माध्यम से भारत क्षेत्रीय सुरक्षा के मुद्दे को G20,

ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन (SCO) और संयुक्त राष्ट्र संघ में गंभीरता से उठाया है जिससे भारत क्षेत्रीय सुरक्षा, आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई, और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संतुलन बनाए रखने के प्रयासों में योगदान कर रहा है। इन सब प्रयासों के कारण भारत का वैश्विक कूटनीति के प्रभाव में वृद्धि हुई हैं।[13]

कूटनीतिक गतिविधियां द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय - वैश्विक राजनीति में भारत की उपस्थिति/भूमिका में 2014 के बाद जबरदस्त इजाफा हुआ है। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभिन्न देशों के साथ आगे बढ़कर द्विपक्षीय समझौते और रणनीतिक साझेदारी को क्रियान्वित किया। रणनीतिक साझेदारियों के तहत अमेरिका के साथ भारत की रक्षा, सुरक्षा, प्रौद्योगिकी और व्यापार के तहत कई क्षेत्रों में सामरिक साझेदारी विकसित की। 2 + 2 वार्ता और COMCASA और BECA जैसे रक्षा समझौता ने भारत के सामरिक स्थिति को मजबूत किया हैं। रूस के साथ S400 वायु रक्षा समझौता एवं ऊर्जा सहयोग, फ्रांस के साथ राफेल विमान की खरीदारी एवं परमाणु सहयोग, इजराइल के साथ कृषि व्यापार एवं रक्षा सहयोग जिसमें फाल्कन अवाक्स, हैरान सर्चर 11, हारोप ड्रोन, बराक एंटी-मिसाइल शामिल है। ऑस्ट्रेलिया के साथ नियमित रूप से सैन्य अभ्यास, क्वॉड में भागीदारी, हिंद प्रशांत में मिलकर सुरक्षा, जापान के साथ मिलकर भारत ने अपनी बुनियादी ढांचे का निर्माण - जैसे मुंबई अहमदाबाद हाई स्पीड रेल प्रोजेक्ट में निवेश एवं सहयोग, कनाडा के साथ कृषि एवं ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग, ब्रिटेन के साथ लिविंग ब्रिज अर्थात संस्कृत, शैक्षिक एवं व्यवसायिक सहयोग, नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में फ्रांस एवं जर्मनी के साथ सहयोग, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की स्थापना, आदि ने भारत की वैश्विक स्थिति को मजबूत किया है जिसके कारण आज वैश्विक राजनीति में पहले की अपेक्षा भारत की भूमिका में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।[14]

भारत की मध्य एशियाई देशों (कजाकिस्तान,किर्गिस्तान,तुर्कमेनिस्तान और उज़्बेकिस्तान) के साथ सशक्त भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक संबंध से भारतीय हितों का संवर्धन हो रहा है क्योंकि इन देशों में रूस, जापान, चीन, अमेरिका, तुर्की, पाकिस्तान, ईरान, आदि देशों के राष्ट्रीय हित निहित है। भारत ने कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति के तहत इन देशों से आर्थिक, व्यापारिक, वाणिज्यिक, ऊर्जा, सांस्कृतिक एवं सामरिक संबंध विकसित किए हैं। वर्ष 2014 के बाद इजरायल के अतिरिक्त पश्चिम एशिया में भारत ने संयुक्त अरब अमीरात और ईरान के साथ महत्वपूर्ण सामरिक एवं कूटनीतिक संबंध विकसित किए हैं। पश्चिम एशिया में चीन, रूस ईरान के बढ़ते गठजोड़ से क्षेत्रीय संतुलन को दूर करने हेतु भारत अमेरिका के साथ मिलकर नए संगठन आई 2 यू 2 संगठन का गठन कर चुका हैं जो भारतीय राष्ट्रीय हित के अनुकूल है। इस संगठन में भारत, इजराइल, संयुक्त अरब अमीरात और ईरान शामिल है जिससे भारत के अच्छे द्विपक्षीय संबंध है।[15]

बहुपक्षीय संगठन में भूमिका - वैश्विक राजनीति में भारत की स्थिति और भूमिका को मजबूत करने में अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भारत की बढ़ती सक्रिय भागीदारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके माध्यम से भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ, जी 20, ब्रिक्स, इब्सा, NAM, G77, शंघाई सहयोग संगठन, क्वाड, और ISA, WHO जैसे वैश्विक मंचों पर अपनी आवाज बुलंद की है। अब भारत की ओर पूरा विश्व देखाता है। भारत संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद के अस्थाई सदस्य के रूप में आठ बार चुना जा चुका है जिसका आठवीं अंतिम कार्यकाल 2022 में समाप्त हुआ है। भारत अपनी बढ़ती अर्थव्यवस्था, जनसंख्या, और अंतरराष्ट्रीय शांति मिशनों के योगदान के आधार पर संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थाई सदस्यता की मांग कर रहा है। भारत के बढ़ते वैश्विक प्रभाव का ही नतीजा है कि चीन को छोड़कर बाकी परमाणु संपन्न राष्ट्र भारत के दावों का समर्थन करते हैं। वर्ष 2023 में भारत ने G20 की अध्यक्षता कर जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, डिजिटल परिवर्तन, आर्थिक असमानता, वित्तीय सहायता, जलवायु वित्त पोषण तथा विकासशील देशों के चिंताओं को ग्लोबल साउथ के रूप में उजागर कर एक वैश्विक नेता की भूमिका में अपने आप को भारत ने प्रस्तुत किया और विश्व को वसुधैव कुटुंबकम् का संदेश दिया जिसको पूरे विश्व ने सराहा है।[16]

विकासशील देशों के मंच ब्रिक्स (ब्राजील,रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) के माध्यम से भारत विकासशील देशों के लिए वैश्विक आर्थिक एवं वित्तीय ढांचों में सुधार की मांग करता है। वहीं दूसरी तरफ इतने बड़े संगठन के

द्वारा अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति भी करता है। ब्रिक्स ने न्यू डेवलपमेंट बैंक की स्थापना कर बुनियादी ढांचे एवं सतत विकास की परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता में मदद कर भारत ने अपने आप को वैश्विक आर्थिक सहयोग के रूप में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में स्थापित किया है। इसके साथ-साथ भारत ने शंघाई सहयोग संगठन के सदस्य के रूप में मध्य एशिया में आतंकवाद, चरमपंथ एवं नशीली दवाओं के विरुद्ध भी लड़ाई में मजबूत भूमिका निभाई है जिससे क्षेत्रीय सुरक्षा में भारत की भूमिका और वैश्विक रणनीतिक स्थिति मजबूत हुई है। बहुपक्षीय संगठन क्वाड और WTO में भारत की भूमिका उसको एक वैश्विक पहचान दिलाता है। क्वाड (भारत,अमेरिका,जापान,ऑस्ट्रेलिया) हिंद प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए भारत का बहुपक्षीय रणनीतिक भागीदारी है। इससे भारत की वैश्विक कूटनीति सशक्त हुई है। इसके साथ ही हिंद प्रशांत क्षेत्र में आकस (AUKUS) का गठन एक नई सुरक्षा साझेदारी के रूप में देखा जा रहा है जिसमें ऑस्ट्रेलिया,यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल है। स्क्वाड के रूप में अमेरिका,जापान,आस्ट्रेलिया,फिलिपिन्स के गठबंधन का भारत ने समर्थन किया हैं। क्वाड के साथ मिलकर आकस,स्क्वाड हिंद प्रशांत क्षेत्र में भारत की स्थिति को वैश्विक रणनीति में सामरिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाता है जो सुरक्षा, प्रौद्योगिकी और सामरिक हितों को साझा करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।[17]

वैश्विक चुनौती में भारत की भूमिका - कोविड-19 महामारी के दौरान भारत विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ जिस प्रकार सहयोग किया उससे भारत की एक वैश्विक छवि बनी है कि संकट काल में भारत पर भरोसा किया जा सकता है । भारत ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ मिलकर न केवल कोरोना टीका का विकास किया बल्कि वैक्सीन मैत्री के तहत 150 देशों को मुफ्त टिके देकर वैश्विक सहयोग को बढ़ावा दिया । इससे भारत को एक जिम्मेदार वैश्विक नेता की पहचान मिली जो वैश्विक स्वास्थ्य संकट में मदद के लिए आगे आता है।

वैश्विक राजनीति में **जलवायु परिवर्तन तथा स्थिरता** के क्षेत्र में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका है। वर्ष 2023 में G 20 की अध्यक्षता के माध्यम से भारत ने वसुधैव कुटुंबकम् का संदेश पूरे विश्व को दिया। भारत में अपने G20 की अध्यक्षता के माध्यम से विश्व को यह एहसास दिलाया कि हमारा पृथ्वी एक है, हम एक परिवार के सदस्य हैं तथा हमारा भविष्य भी एक है। इसके लिए विश्व समुदाय को मिशन लाइफ (LiFE) अर्थात व्यक्तियों और समुदाय को जलवायु अनुकूल जीवन शैली अपनानी होगी। यह विचार प्रधानमंत्री मोदी ने वर्ष 2022 की ग्लासगो सम्मेलन में दिया था। यह इस बात का प्रमाण है कि भारत संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP) का मजबूत पक्षधर रहा है। भारत में कॉप 26 और कॉप 27 जैसे सम्मेलनों में "नेट जीरो उत्सर्जन" का लक्ष्य रखा और देश में पंचामृत नमक पांच प्रमुख लक्ष्यों की घोषणा की। भारत वैश्विक मंच पर अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) का सदस्य होकर न केवल नवीकरणीय ऊर्जा के प्रति सहयोगात्मक रुख रखता है बल्कि वैश्विक दक्षिण की आवाज बनकर विकासशील देशों के हितों को विभिन्न जलवायु वार्ताओं सम्मेलनों में उनके पक्ष को प्रभावी रूप से रखता है। भारत में G77, संयुक्त राष्ट्र संघ मे "कामन बट डिफ्रेंशिइटेड रिस्पांसिबिलिटी (CBDR)" की नीति का समर्थन किया है जिसमें विकासशील देशों को उचित समय और संसाधन देने की बात की गई है।[19]

भारत ने **डिजिटल कूटनीति और प्रौद्योगिकी** के माध्यम से वैश्विक राजनीति में अपने आप को स्थापित किया है। विश्व की आधी आबादी (लगभग चार अरब) के पास डिजिटल सुविधा नहीं है। विश्व के 195 में से 130 से ज्यादा देशों के पास अभी भी डिजिटल भुगतान प्रणाली नहीं है। भारत ने खुद का उदाहरण विश्व के समक्ष रखा है और अपनी जेएएम (JAM) योजना -जन धन बैंक खाता, आधार कार्ड और मोबाइल नेटवर्क के माध्यम से विश्व का सबसे बड़ा प्रत्यक्ष लाभ अंतरण को अंजाम दिया है। मोदी सरकार ने 44 करोड़ से अधिक लोगों की बैंक खाते खोले हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के यूपीआई अर्थात यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस के जरिए वित्त वर्ष 2023-24 में 131 अरब का लेनदेन किया है जो दुनिया में रियल टाइम लेनदेन का 46 प्रतिशत है। भारत की यूपीआई के इस सफलता से अफ्रीका के देश और नेपाल, भूटान, सिंगापुर जैसे देशों ने भारतीय तकनीक को आपस में साझा किया है। इसके अतिरिक्त भारत में इंटरनेट गवर्नेंस फोरम और डिजिटल इकोनामी वर्किंग ग्रुप जैसे मंचों के माध्यम से भारत में डिजिटल

नीतियों को मजबूत करने में योगदान दिया है। इसके साथ ही भारत में ई-विद्याभारती और ई-आरोग्यभारती जैसे डिजिटल पहल से वैश्विक शिक्षा एवं स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत ने ग्लोबल सेंटर फार ट्रांसफॉर्मेटिव टेक्नोलॉजी जैसे पहल के माध्यम से विकासशील देशों के संचार व्यवस्था एवं उनके बीच 5G/6G प्रौद्योगिकी के विकास में सहयोग कर वैश्विक राजनीति में एक सशक्त देश की भूमिका अभिनीत की है।[20]

इसके अतिरिक्त भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में ग्लोबल साइबर एथिक्स और साइबर क्राइम से निपटने के लिए सहमति आधारित कार्य किया है। भारत अमेरिका साइबर डायलॉग, भारत यूरोपीय संघ साइबर सहयोग, तथा अन्य विभिन्न देशों के साथ साइबर सुरक्षा समझौता कर **साइबर डिप्लोमेसी** के तहत वैश्विक राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान में भारत AI फॉर ऑल पहल के माध्यम से वैश्विक सहयोग एवं नवाचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।[21]

वैश्विक संघर्ष- फरवरी 2022 में प्रारंभ रूस यूक्रेन युद्ध तथा अक्टूबर 2023 में प्रारंभ इजराइल फिलिस्तीन युद्ध ने गंभीर वैश्विक संकट खड़ा कर दिया है। इससे न केवल सभी देशों की सुरक्षा चिंताएं बढ़ी है बल्कि वैश्विक तनाव के इस दौर में शस्त्रीकरण हद से आगे बढ़ गया है। इससे न केवल खाद्य एवं ऊर्जा संकट पैदा हुआ है बल्कि वैश्विक विस्थापन एवं बेरोजगारी को बढ़ाकर मानवता को ही संकट में डाल दिया है। ऐसी स्थिति में वैश्विक नेतृत्व भारत की तरफ देख रहा है क्योकि शंघाई सहयोग संगठन (2022 समरकंद अफगानिस्तान) सम्मेलन में रूस-उक्रेन युद्ध के दृष्टिगत भारत ने दुनिया को यह संदेश दिया कि आज का युग युद्ध का युग नहीं है। भारत का यह प्रयास आगे भी जारी रहा और अपने जी-20 की अध्यक्षता के माध्यम से भारत ने रूस,अमेरिका, चीन,यूक्रेन को एक मंच पर लाकर शांति वार्ता हेतु सहमति कार्य योजना बनवाया था। पुनः इजरायल, फिलिस्तीन,लेबनान,ईरान संघर्ष से विश्व भारतीय भूमिका का इंतजार कर रहा है जो भारत के बढ़ते वैश्विक साख एवं ताकत का प्रमाण है।

संस्कृत कूटनीति - भारत ने अपनी सॉफ्ट पावर कूटनीति अर्थात संस्कृति, परंपरा, भाषा, कला, और साहित्य के माध्यम से अपनी अंतरराष्ट्रीय छवि को मजबूत किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से भारत ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून), अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस(2 अक्टूबर), पर संपूर्ण विश्व को दिवस आयोजित कराकर अपनी महान संस्कृति, मूल्य, संस्कार, एवं ज्ञान परंपरा से विश्व को परिचित कराया है। यही नहीं अपनी बौद्ध कूटनीति से चीन सहित उन सभी देशों से सांस्कृतिक संबंध स्थापित किया जहां बौद्ध धर्म के अनुयाई बड़ी संख्या में रहते हैं। इसकी अतिरिक्त हिंदी भाषा,साहित्य,फिल्म एवं मनोरंजन के द्वारा भी भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी सशक्त उपस्थिति हमेशा दर्ज करता रहता है। भारत की यह भूमिका भारत को एक अहिंसात्मक,शांति प्रिया देश के रूप में प्रतिस्थापित करता है और एक ऐसी छवि का निर्माण करता है जिसमें संपूर्ण विश्व अपना विश्वास व्यक्त करते हैं एवं भारत के इस महान संस्कृति, ज्ञान परंपरा को अनुसरण करते हैं।

निष्कर्ष -उपर्युक्त विवेचना से यह स्पस्ट है की भारत अपनी एतिहासिक विरासत, ज्ञान परम्परा,मूल्य,संस्कृति,विकास,विज्ञानं,प्रोद्योगिकी,नेतृत्व क्षमता,रास्ट्रीय,क्षेत्रीय एवम अंतराष्ट्रीय दृष्टिकोण,राणनीति,कूटनीति,सामरिक नीति से वैश्विक राजनीति में प्राचीन कल से वर्तमान तक अपनी सशक्त भूमिका अभिनीत की हैं और आगे भी करेगा। लेकिन यह भूमिका अमेरिका,रुस,चीन जैसे विकसित देशो की सापेक्ष नहीं हैं । जब भारत स्वाधीनता का 100वां वर्ष मनाएगा (1947 में) तब हम एक विकसित देश होंगे, ऐसा प्रस्ताव नीति आयोग ने रखा है। निश्चित रूप से आज हम दुनिया की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था है और वह दिन दूर नहीं जब हम दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था होंगे। लेकिन यह राह आसान नहीं है। अर्थशास्त्रियों को मानना है कि विकसित भारत बनने हेतु अपने जीडीपी को डबल डिजिट में करना होगा क्योंकि आज जितने भी विकसित देश है उनकी अर्थव्यवस्था, जैसे - अमेरिका (28781 अरब डालर), चीन (18532 अरब डॉलर), जर्मनी (4591 अरब डालर), जापान (4110 अरब डॉलर), भारत (3931 अरब डॉलर)[22],-भारत की तुलना में अत्यधिक है। भारत 2047 तक महाशक्ति बने इसके लिए अर्थव्यवस्था, इंफ्रास्ट्रक्चर, उद्योग, शिक्षा, टेक्नोलॉजी, प्रति रक्षा, स्वास्थ्य,कृषि ,सॉफ्ट पावर में न केवल इनोवेशन करना होगा बल्कि

हमें अपनी बहुसंख्यक जनसंख्या की प्रति व्यक्ति आय, सामाजिक सुरक्षा, गरीबी, भुखमरी, स्वास्थ्य, बीमा, युवा कौशल एवं आधी आबादी को प्रत्येक क्षेत्र में भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी तभी जाकर भारत एक विकसित राष्ट्र का सपना साकार कर सकेगा। वास्तव में 2047 में एक विकसित भारत होने के राष्ट्रीय विमर्श ही इस बात का प्रमाण है कि हम इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु कदम बढ़ा चुके हैं।

संदर्भ सूचि-

1. वर्ल्ड फोकस, विशेषांक, भारत और विश्व शक्ति के केंद्र, सितंबर 2018, दिल्ली, पृ.– 48–49

2. सूद, प्रसाद, ज्योति, भारतीय राजनीतिक विचारक, के. नाथ एंड कं. मेरठ, 2011–12 पृ. 80

3. पोद्दार, चंद्र, सुरेश, प्राचीन भारत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली, पृ. 63

4. चंद्र, सतीश, मध्यकालीन भारत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 1982, पृ. 17–22

5. चंद्र, विपिन, मुखर्जी, मृदुला, मुखर्जी, आदित्य, आजादी के बाद का भारत, हिंदी माध्यम कार्यन्यवयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 2017, पृ. 206–10

6. चटर्जी, अनिक, इंडिया इन द 21st सेंचुरी, फॉरेन पॉलिसी पर्सपेक्टिव इन कंपलेक्स वर्ल्ड अटलांटिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2022, पृ .232–42

7.https://hi.wikipedia.org

8.https://wwwabplive.com

9.https://navbharattimes.indiatimes.com

10. सिंह, उदयभान, अंतरराष्ट्रीय संबंध, विविध आयाम मुद्दे और चुनौतियां, मैंग्राहील प्रकाशन, चेन्नई, 2023

11. वही:

12. डॉ. तिवारी , रजनीकांत, भारत की जी20 अध्यक्षता, भारतीय राजनीतिक विज्ञान शोध पत्रिका,वर्ष पंचदश, अंक प्रथम,जनवरी–जून 2023

13.चटर्जी, अनिक, इंडिया इन द 21st सेंचुरी, फॉरेन पॉलिसी पर्सपेक्टिव इन कंपलेक्स वर्ल्ड अटलांटिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली,2022, पृ .232–42

14. पावर, प्रवीण, भारती समावेशी वैश्विक स्वास्थ्य ढांचा, संपादकीय, अमर उजाला ,12 जनवरी 2023

15. डॉ. तिवारी, रजनीकांत, भारत की जी20 अध्यक्षता, भारतीय राजनीतिक विज्ञान शोध पत्रिका,वर्ष पंचदश, अंक प्रथम,जनवरी–जून 2023 पृ.91

16. योजना फिंच अप्रैल 2023

17. वही:

18. भारत कैसे बन सकता है विश्व शक्ति, इंडिया टुडे, स्वतंत्रता दिवस विशेषांक, 28 अगस्त 2024, पृ.14–15

19. बाजपेई, के. एंड पंत एच. वी.,भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा एक पाठक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013

20. मेलोन, डी.एम., हाथी नृत्य करता है? समकालीन भारतीय विदेश नीति, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011

21. मोहन, सी. आर , रूबिकान को पार करना: भारत की नई विदेश नीति का निर्माण, व्याइकिंग 2003

22. मुखर्जी, आर एंड मेलोन. डी., इंडो पेसिफिक में भारत, नई दिल्ली का अवसर क्षेत्र, ब्रुकिंग्स, इंस्टीयूशन प्रेस, 2019

23. थरूर, एस, पैक्स इंडिका, 21वीं सदी की दुनिया और भारत, एलन लेंन, 2012,